मैथिली

# उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास': व्यक्तित्व ओ कृतित्व

- प्रोफेसर वीरेन्द्र झा
पटना विश्वविद्यालय, पटना।

बहुमुखी प्रतिभाक धनी स्वर्गीय उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क प्रसिद्ध खण्डकाव्य 'पतन'क एकटा अंश अछि-

" कामना नहि जखन मनमे
तखन चिन्ता कोन
क्षुब्ध नहि यदि चित्त सम अछि
रत्न- रज वा सोन।"

ई हिनक जीवन-दर्शन छल। 'व्यास'जी मैथिली भाषा-ओ साहित्यक अनन्य उपासक ओ बहुविधावादी लेखक छलाह। यद्यपि हिनक पेशाक क्षेत्र भाषा-साहित्यसँ भिन्नक छल तथापि अपन अध्ययन-अध्यवसायक बलपर मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा- उपन्यास, कविता, कथा, यात्रा- साहित्य, अनुवाद इत्यादिमे लेखन कए मैथिली साहित्यक सेवा ओ श्रीवृद्धि कएल। विशेषता ई जे हिनक कोनो विधाक लेखन दोषसँ न्यून नहि अछि।

'व्यास'जी प्राचीन सँस्कृतिक पोषक रहितहुँ नवताक पक्षधर छलाह। ई भारतीय सँस्कृतिक महत्ताक केहन गुणग्राही छलाह तकर प्रतिबिम्बन (हिनक) 'दू-पत्र' उपन्यासमे भेटैत अछि; एहिमे दू सँस्कृतिक तुलना करैत भारतीयताक स्थापन कएलनि अछि।

ई कर्मक प्रधानताक पक्षपाती छलाह। मानवक कर्म, परोपकारक भावना, लोभक प्रवृत्ति इत्यादि जे गुण-अवगुण तकर झलक हिनक खण्डकाव्य 'पतन' एवँ 'सँन्यासी' आ आनो रचनामे भेटैत अछि। अपन प्रवास- जीवनक विवरणक क्रममे ई एहि बातक ध्यान रखैत छथि जे मैथिल समाजमे कोना परिवर्तन आबए? लोक कोना बसए जे देश-सेवा सबसँ पैघ धर्म थीक? एही क्रममे अमेरिकाक दर्शनीय स्थल, लोक-व्यवहार, लोक-सँस्कृति इत्यादि

पर सेहो दृष्टिपात कएने छथि।
हिनक अनुवाद-कार्य सेहो उल्लेखनीय छनि।
जीवनवृत्त: उपर्युक्त अक्षर पुरुष 'व्यास'जीक जन्म 16 जुलाइ, 1917 कें मधुबनी जिलाक अन्तर्गत पैतृक निवास हरिपुर बख्शी टोलमे भेलनि। ई, नओ भाइ-बहिन छलाह, मुदा दीर्घजीवी स्वयं आ एकटा भाए-महेन्द्र नाथ झा टा भेलाह। परिवारक दयनीय स्थिति एहन रहनि जे पिता विश्वनाथ झा घराड़ी आ एक गाछी छोड़ि सभटा बन्हकी लगा गेल रहथिन।
हिनक मिडिल धरिक शिक्षा गामेक सरकारी विद्यालयमे भेलनि आ आगूक अध्ययन अर्थाभावे अवरुद्ध होबए लागलनि त नानीक सखी आ तत्कालीन दरभंगा महाराजक पारिवारिक सदस्य-बौआ जिनकासँ बहिनपा रहनिक सौजन्यसँ सप्तम कक्षामे पाँच टाका मासिक अनुदान भेटब शुरु भेलनि। ई निरन्तर भेटैत रहलनि। राजनगरक रमेश्वर उच्च विद्यालयसँ प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक करलनि। फेर पटना साइंस कॉलेजमे अध्ययन आ अन्ततः पटनेक तत्कालीन बिहार इंजीनियरिंग कॉलेजसँ 1942 मे बी॰एस-सी॰ इंजीनियरिंग करलनि। तुरंते बिहार सरकारक कृषि विभागमे सहायक अभियन्ताक रूपमे नियुक्त भए गेलाह। फेर 01 मार्च, 1943 कें पी॰ डब्ल्यू॰ डी॰ मे सहायक अभियन्ताक रूपमे योगदान करलनि। पदस्थापन सिन्दरीमे भेलनि। ओहि समयमे झारखण्ड अलग राज्य नहि बनल छल; ओ त बहुत बादमे अलग भेलैक। ओतए 'व्यास' नदी पर बान्ह आदिमे अपन योग्यता आ दक्षताक परिचय देलनि। 1952 मे गयामे पदस्थापन भेलनि। ओहि ठामक जलापूर्ति योजना आ कार्यान्वयन प्रमुख

दायित्व छलनि तकर निर्वहन त करबे कयलनि, मुदा हिनक मन आर.सी.सी.क डिजाइनिंग कार्यमे बेस लगलनि। ओहिमे नव-नव प्रयोग करैत रहलाह।

1959 मे अधीक्षण अभियन्ताक रूपमे पटना पदस्थापन भेलनि। पुनः राँची स्थानान्तरित कए देल गेलनि। पाँच वर्ष ओतए रहलाह। ओकरे बाद 1968 मे उप मुख्य अभियन्ताक रूपमे पटना घुरि अएलाह। एहि बीच 1963 सँ कतेक वर्ष धरि 'बिहार इंजीनियरिंग सर्विस एसोसिएशन' क अध्यक्ष पद सुशोभित करलनि।

1969 मे 'व्यास' जी अपर मुख्य अभियन्ताक रूपमे पदोन्नति पओलनि आ 1970 मे मुख्य अभियन्ता बनाओल गेलाह। एही परसँ 1974 मे सेवानिवृत्त त भए गेलाह, मुदा हिनक बौद्धिक क्षमता आ कार्यानुभवकेँ देखैत बिहार सरकार 'लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण एवं औद्योगिक विकास प्राधिकार' क परामर्शी बना देलकनि। एहि पदपर 1977 धरि रहलाह। 1978 सँ 81 धरि मैथिली अकादमी, पटनाक निदेशक-सह-सचिव पदकेँ सुशोभित करलनि।

कृतित्व: डॉ. जयकान्त मिश्रक अनुसार हुनका आचार्य रमानाथ झासँ सुनल छलनि जे 'व्यास' जी छात्रजीवनमे किछु आनक संग संकल्प लेने रहथि जे कतहु रहताह त प्रतिदिन आधो घंटा मातृभाषाक सेवा करबे करताह आ किछु लिखैत रहताह। तकर अनुपालन ई जीवन भरि करैत रहलाह। तेँ मैथिलीक बहुविध सेवा कए सकलाह।

हिनक पहिल कविता बहौक वर्ष, अर्थात् 1945 मे अमित्राक्षर छंदमे 'विद्यापति मृत्यु' शीर्षकसँ 'प्रबुद्ध मैथिल समाज' द्वारा प्रकाशित 'मैथिली नवीन साहित्य' मे प्रकाशित भेलनि। उल्लेखनीय अछि जे बाँग्लाक माइकेल मधुसूदन दत्तक 'मेघनाद-वध'

क अनुसरण कए अमित्राक्षर छंदक प्रयोग मैथिली मे तन्त्रनाथ झा आरम्भ कए चुकल छलाह, मुदा पुस्तकाकार सबसँ पहिने उपन्यास 'कुमार' नामसँ 1946 मे भेलनि। एहिमे सामाजिक ओ साँस्कृतिक मूल्यक एक आदर्श ठाढ़ कएने छथि।

काल्पनिक कथानक पर आधारित खंडकाव्य 'सन्यासी' 1947 मे प्रकाशित भेलनि। एहिमे कथित मोक्ष हेतु पुत्रक आवश्यकता प्रतिपादित भेल अछि संगहि नारिक त्याग ओ बलिदानक कथा सेहो कहल गेल अछि जे कोना छोट-छीन गलतीक कारणेँ जीवन भरि हेतु पति द्वारा त्यागि देल गेल छैक। एहिमे गामक दूषित मानसिकता पर सेहो प्रहार भेल अछि।

" मूर्ख बनक यदि इच्छा अछि, रहू गाम....
अक्षरशः ई सत्य। गाम रहि लोके
सीखत केवल क्रोध, राग, विद्वेष
मत्सरता, आनक उन्नतिकेँ देखि
ईर्ष्यानलसँ दग्ध विगत संतोष,
आर्थिक संकट पंगु, संकुचित दृष्टि
दूषित ग्राम्य समाज, सकल ग्रामीण।"

1952 मे सात गोट कथाक संग्रह 'विडम्बना' प्रकाशित भेलनि। एकर एकटा कथा 'फसल जमाय' कारणेँ 'व्यास' जी तुरत ख्यात भए गेलाह। एकरा विषयमे प्रोफेसर रमानाथ झा लिखने छथि- "कथा सबटा कल्पितो हो तथापि कहबाक ढंग तेहन चमत्कारक अछि; भाषा तेहन प्राकृतिक अछि; परिस्थितिक वर्णन तेहन स्वाभाविक अछि जे ई सबटा सत्ते गप्प सन प्रतीत होइत अछि।" ('विडम्बना'क भूमिका)। एही कथाक प्रसंग डॉ. जयकान्त मिश्रक मत छलनि जे- " ई एकटा पूर्ण विकसित एवं सफल कलाकृति थिक जाहिमे कृत्रिमताक कतेको प्रवृत्ति नहि छनि, ओ हृदयसँ बहराएल स्वाभाविक साहित्य थिक। ओकर प्रत्येक अंश अपना जगह पर छैक; किन्तु जे किछु प्रत्येक

अशोक अपन अप्रमुक्त छैक।" "शिखरिणी" पृष्ठसंख्या 19
'व्यास'जी 1964 मे 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता' आ 1965 मे 'रुबाइयात - ए - ओमर खैयाम' क पद्यानुवाद कएलनि। मैथिल संस्कृतिक अनुकूल बूझि 1967 मे बँगलाक सुप्रसिद्ध साहित्यकार शरत्‌चन्द्रक उपन्यासक अनुवाद 'बाभनक बेटी' प्रकाशित कएलनि।

1968 मे चारि टा मात्र पात्रक आधारपर 'दू-पत्र' उपन्यास प्रकाशित भेलनि। एहिपर अगिले वर्ष अर्थात् 1969 मे भारत सरकारक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था 'साहित्य अकादेमी' सँ पुरस्कृत भेलाह। एहिमे भारतीय (मैथिल) एवं अमेरिकन संस्कृतिक तुलनात्मक विश्लेषण भेल अछि। पहिल पत्र इन्दु पति सुरेन्द्रकेँ लिखैत छथि जे उच्च शिक्षा ग्रहण करए अमेरिका गेल छलाह आ ओतहि चाकरी करैत रहए लगलाह। एहिसँ दुःखी भए इन्दु पतिकेँ सम्पूर्ण सुखसँ परिचय करबैत छथि। दोसर पत्रमे जेसिका रमेशकेँ अमेरिकन व्यवहारसँ अवगत करबैत छथि। एहिमे दूनू संस्कृतिक तुलना भेल अछि।

1965 मे 'महाभारत'क आदि पर्वक कथानकक आधारपर 'पतन' नामसँ दोसर खण्डकाव्य प्रकाशित भेलनि। एहिमे कहल गेल अछि जे देवता अथवा दानव सभ अपन कर्मक फलक उत्तरदायी होइत अछि। नहुष जाबत धरि पृथ्वीपर रहलाह ताबत धर्मात्मा आ यशस्वी बनल रहलाह, मुदा स्वर्गक सिंहासन भेटने अहंकार आबि गेलनि आ अनेक प्रकारक दुष्कर्ममे लिप्त भए गेलाह। अन्ततः स्वर्गक सिंहासनसँ त च्युत होबहि पड़लनि आ सर्प बना देल गेलनि। एहि तरहेँ पृथ्वी आ स्वर्ग दूनूक सिंहासनसँ वंचित होबए पड़लनि। पहिने 'मिथिला मिहिर' मे धारावाहिक रूपेँ

प्रकाशित 'विप्रदास' 1977 मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेलनि। 1978 मे अमेरिका-प्रवासक अनुभव 'विदेश-भ्रमण' सँ प्रकाशित करबओलनि। ज्ञातव्य जे 1958 मे छओ मास लेल ओतए गेल रहथि। एहिमे ओतुका दर्शनीय स्थल खान-पान आदिक वर्णन त अछिए संगहि राष्ट्रीयताक भावना सेहो चित्रित भेल अछि। ई मैथिलीमे यात्रा-साहित्यक प्रमुख पोथीक रूपमे परिगणित होइत अछि।

1986 मे बच्चा सभक सिखबा लेल 'अक्षर परिचय' क रचना करलनि आ 1989 मे 'भजना-भजले' नामसँ अन्य कथा-संग्रह प्रकाशित करओलनि। 1994 मे 'महाभारत' क प्रथम आ 1999 मे द्वितीय खण्डक अनुवाद करलनि।

## सम्मान ओ पुरस्कार :

'व्यास' जी तन-मन-धनसँ मैथिलीक अनेक प्रकारेँ सेवा करल। तैँ स्वाभाविक रूपसँ नाना प्रकारक सम्मान आ पुरस्कार भेटलनि। यथा पूर्व निवेदित 1969 मे 'साहित्य अकादेमी' सन प्रतिष्ठित पुरस्कार, 1984 मे बिहार सरकार आ 1987 मे 'संकल्प लोक', चेतना समिति' सँ सम्मान, लहेरियासराय (दरभंगा) क सम्मान इत्यादि उल्लेखनीय पुरस्कार-सम्मान प्राप्त भेलनि। 1990 ई. मे सबसँ पहिने मैथिलीमे 'साहित्य अकादमी' क अनुवाद पुरस्कार प्राप्त करबा सौभाग्य प्राप्त भेलनि। पोथी उपर्युक्त शरत्चन्द्रक बाँग्ला उपन्यासक मैथिलीमे 'विप्रदास' अनुवाद छल।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे बहुआयामी प्रतिभाक धनी 'व्यास' जी अपन अध्ययन, अध्यवसाय आ लेखनक बलपर मैथिली साहित्यक बहुविध सेवा करल। तैँ मैथिलीमे वरेण्य साहित्यकारक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। हिनक मैथिली सेवा

अनुसरणीय अछि। सुरेन्द्र झा 'सुमन' कम शब्दमे हिनका नीक जकाँ परिभाषित करल अछि-

" मिथिला जनपद ग्राम, नाम हरिपुर विख्याते।
जतय शास्त्रविद, ज्ञानी-विज्ञानी अवदाते॥
जन्म लेल बुधवर उपेन्द्र 'व्यास' हु उपनामे।
ज्ञान, कर्म ओ भक्ति निरत अविरल गुण ग्रामे॥
जे 'कुमार' कैं भार देल जन-जन केर अभिमत।
कसलकैं बौंसल जमाय वा रहथु कतहु रत॥
'सन्यासी' कैं लोक हितक व्यापी कहि पूजल।
नहुषहुँकैं खसाय इन्द्रासनसँ मनु जूसल॥
मैथिलीक नभमे जे 'शरत्चन्द्र' बनि उगल।
जनिक रश्मि घर-घरकैं कय रहल समुज्ज्वल॥
अभियन्ता प्रधान, प्रदेशक करल समुन्नति।
'व्यास' वास्तविक बनल रहथि भाषाक विमल॥
भति अनुजन्महु उपेन्द्र प्रति प्रेम समर्पित।
करइत छथि सुरेन्द्र आशीर्वादित प्रमुदित चित।"

(डॉ. भीमनाथ झाक सौजन्यसँ 'खोज-खबरि' नामक तत्कालीन पत्रिकामे प्रकाशित।)